शब्द शक्तियाँ

–प्रा. मिथिलेश अवस्थी

शब्द तथा वाक्यों की सार्थकता उनके अर्थ में हैं. यह अर्थ जिस शक्ति या व्यापार द्वारा जाना जाता है अर्थात् जिस शक्ति या व्यापार द्वारा अर्थ का बोध होता है उसे शब्द शक्ति कहते हैं. शब्द के प्रायः तीन प्रकार के अर्थ माने जाते हैं.

१. अभिधार्थ या वाच्यार्थ :– शब्द का वह अर्थ जो कोषों में प्रायः मिलते हैं जैसे शिशु का अर्थ बच्चा गदर्भ का अर्थ गध.

२. लक्ष्यार्थ या लाक्षणिक अर्थ :– जैसे किसी मनुष्य को गधा कहने पर गधा शब्द का अर्थ मूर्ख से लिया जाता है.

३. व्यंग्यार्थ :– जैसे संध्या हो गई वाक्य का अर्थ हो सकता कि शाम हे गई. अतः काम बंद कर देना चाहिए या दीपक जला लेना चाहिए.

इन तीनों अर्थों को घोषित करने वाले शबद को तीन शक्तियों के रूप में माना जाता है– अभिध लक्षणा औरव्यंजना. कुछ आचार्यों न तात्पर्य नाम की चौथी शक्ति भी स्वीकार की है. यहाँ क्रम से इन शब्द शक्तियों का विवेचन इस प्रकार है.

१. **अभिधा :–** अभिधा शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द के वाचक अर्थ का बेध हेता है.

उदाहरणार्थ :– गौ कहने पर गाय नामक प्राणी का तत्काल बोध होता है. यह शब्द की मुख्य शक्ति है. जीवन के साधारण क्रियाकलापों में सर्वत्र इसी का प्रचार है. सृष्टि के प्रारंभ से अब तक मनुष्य ने सबसे पहले शब्द का इसी अर्थ के विकसित किया है. अन अर्थ बाद में उसी के आधार पर लगा लिए गए है. या कल्पित किए गए है. अभिधा में लक्षणा और व्यंजना से केवल एक कमी है कि अभिधा में चमत्कार कम और कभी–कभी ही रहता है.

२. **लक्षणा :–** मुख्यार्थ के बाधित होने पर जहां उससे ही संबंधित दूसरा अर्थ रूढि या प्रयोजन के आधार पर लगाया जाता है वहाँ वह अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है. जिस शब्द शक्ति के द्वारा यह लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है उसे लक्षणा कहते हैं.

लक्षणा शक्ति के दो प्रमुख भेद है–

१. प्रयोजनवती लक्षणा

२. रूढि लक्षणा

१. प्रयोजनवती लक्षणा :– जहाँ मुख्यार्थ किसी प्रयोजन के कारण लक्ष्यार्थ का बोध कराए वहाँ प्रयोजनवती लक्षण मानी जाती है. पयोजनवती लक्षणा का उदाहरण इस प्रकर है गांधीजी ढ पसली के आदमी थे. मनुष्य डेढ पसली का नहीं हो सकता अतः मुख्यार्थ में बाधा हुई अर्थ लगाया गया कि गंधीजी क्षीणकाय पुरुष थे. अतः यह प्रयोजन के आधार प अन्य अर्थ होने से प्रयोजनवती लक्षणा हुई. प्रयोजनवती लक्षणा के भी दे भेद है– गौणी और शुद्धा.

१. गौणी लक्षणा :– गौणी लक्षणा में मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में सादृश्य का संबंध हेता

है.

उदाहरण :- पतझड था झाड खडे थे,

सुखी सी फुलवारी में.

किसलय नव कुसुम बिछाकर,

आये तुम इस क्यारी में.

यहाँ पतझड का मुख्यार्थ है पत्तों का गिर जाना और लक्ष्यार्थ है आशाओं का समाप्त हो जना, जीवन की शुष्कता पत्तों के सुखकर गिरने अर्थात् शुष्कता और जीवन की शुष्कतामें सादृश्य संबंध है.

२. शुद्ध लक्षणा :- यहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में सादृश्य को छोडकर अन्य कोई संबंध जैसे-आधार-आधेय अथवा अंग-अंगी का संबंध हो तो वहाँ शुद्धा लक्षणा मानी जाती है.

उदाहरण :- निर्दयता कौ मारो से

उन हिंसक हुंकारो से

नत-मस्तक आज हुआ कलिंग

यों तो यहाँ प्रत्येक पंक्ति में लक्षण का चमत्कार है परंतु सुविधा के लिए हम निर्दयता और कलिंग इन दो शब्दों को ले सकते हैं. निर्दयता का भाव है यह इसका मुख्यार्थ है. भाव मार नहीं कर सकता यह अर्थ में बाँधा है. लक्ष्यार्थ है- निर्दयता पूर्ण मनुष्य यहाँ निर्दयता और निर्दयतापूर्ण मनुष्य मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में सादृश्य संबंध न होकर गुण और गुणी का संबंध है अतः यहाँ शुद्ध लक्षणा हुई. कलिंग नतमस्तक नहीं हो सकता लक्ष्यार्थ लिया गया है कलिंग और कलिंग देशवासी में आधारआधेय संबंध है अतः यहाँ भी सादृश्य संबंध ना होने से शुद्धा लक्षणा हुई.

उपादान लक्षणा और लक्षण लक्षणा

१. उपादान लक्षणा :- जहाँ मुख्यार्थ की बाधा होने पर और वाकयार्थ की संगति के लिए अन्य अर्थ लक्षित होने पर भी मुख्य अर्थ न छुटे वहाँ उपादान लक्षणा होती है. जैसे सरा घर तमाशा देखने गया है. में घर का अर्थ आधार और आधेय भाव से घर के लोग है और इस लक्ष्यार्थ में मुष्य अर्थ भी संमिलित रहता है. इसीलिए यहाँ उपादान लक्षणा है.

२. लक्षण लक्षणा :- जहाँ पर मुख्यार्थ का बोध होने पर वाच्यार्थ की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ का नितांत त्यागकर अन्य अर्थ ग्रहण क लिया जाता है वहां लक्षण लक्षणा होती है.

मोहि दीन्ह सुज्स सुरजू,

कीन्ह कैकयी सब क काजू.

ऐहि ते मोर कहा अब नीका,

तेहि पर देन चहहु अब टीका.

३. व्यंजना :– व्यंजना का शाब्दार्थ है विशेष रूप से स्पष्ट करना, खोलना याविकसित करना. अभिधा और लक्षणा शक्तियाँ जब अपना अर्थबोध कर चुकती है उसके बाद शब्द की जिस शक्ति द्वारा अन्य अर्थ का एक विशेष अर्थ का बोध होता है उसे व्यंजना कहते हैं. इस शक्ति के माध्यम से जिस विशेष अर्थ का द्योतन होता है उसे व्यंग्यार्थ कहा जाता है.

उदाहरण :– गंगाया घोष – अर्थात् गंगा में गाँव नहीं हो सकता. लक्षणा से इसका अर्थ है कि गाँव गंगा के समीप है. इस प्रकार लक्षणा के भी अपना कार्य समाप्त कर चुकने पर कुछ और अर्थ निकलता है. जैसे गाँव शीतल है, गाँव पवित्र है. यह अर्थ शब्द की व्यंजना शक्ति से निकलता है.

–०–०–०–